मेरी बात : रामकथा जग मंगल करनी

हिंदी साहित्य के सहस्र वर्षों की यात्रा में भक्तिकाल एक ऐसा स्वर्णिम पड़ाव है, जहाँ भारतीय काव्य-प्रतिभा का प्रकर्ष प्रकट होता है। गोस्वामी तुलसीदास इस प्रकर्ष के शिखर पर विराजमान हैं। किसी कविता की चरम सार्थकता तब होती है, जब वो मंत्र बन जाए। आदिकवि वाल्मीकि ने जिस रामकथा को यथासंभव एक इतिहासकार की तटस्थता के साथ संस्कृत महाकाव्य में निरूपित करके गाया, तुलसी ने उस महागाथा को भक्ति के रस से सींचकर, लोकभाषा में ढालते हुए, लोकमंगलकारी स्वरूप देकर जन-जन के कंठ का भूषण बना दिया। तुलसी के इस महाकाव्य ने भारतीय लोक के चित्त को जिस प्रकार स्पर्श किया है, वैसा भक्तिकाल सहित किसी भी काल के. किसी भी कवि की, किसी भी रचना ने संभवतः नहीं किया।

प्रश्न उठता है कि तुलसी की इस विराट सफलता का रहस्य क्या है? क्या कारण है कि पाँच शताब्दी से अधिक का समय बीत जाने के बाद भी उनका सृजन लोगों को निरंतर आकर्षित कर रहा है? यह कहना तो उचित नहीं होगा कि तुलसी ने रामकथा को अपने महाकाव्य का विषय बनाया इसलिए जन-जन तक पहुँच गए। क्योंकि, रामकथा पर तो अनेक कवियों ने रचना की है, परंतु लोकप्रियता के स्तर पर किसीकी रचना 'रामचरितमानस' के आसपास भी नहीं ठहरती।

तुलसी के ही समकालीन आचार्य केशवदास की 'रामचंद्रिका' को देख सकते हैं, जिसमें केशव ने अपना पूरा पाण्डित्य उँडेल दिया, किंतु यह कृति न तो आलोचकों को प्रभावित कर पाई और न आम जनमानस को ही इसमें कोई रस प्राप्त हुआ। केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' जैसे विशेषण अवश्य मिल गए। अतः तुलसी की सफलता रामकथा को अपने महाकाव्य का विषय बनाने मात्र से नहीं है, अपितु उस कथा की प्रस्तुति में तुलसी की जो लोकोन्मुख और संस्कृतिग्राहयी दृष्टि रही है, उसने उन्हें लोकप्रियता के शीर्ष पर प्रतिष्ठित किया है।

वस्तुतः भारतीय लोक को समझने की जो दृष्टि तुलसीदास के पास है, वो अन्य किसी कवि के पास नहीं दिखती। इस तथ्य के ही मनोमंथन के उपरांत 'भारतबोध' पत्रिका के इस संयुक्तांक को 'गोस्वामी तुलसीदास और उनकी लोक प्रज्ञा' पर केंद्रित रखने का विचार मन में आया। इस विचार को जब मैंने अपने शिष्य और तुलसी-साहित्य के अध्ययनशील शोधार्थी श्री पीयूष कुमार दुबे से साझा किया तो उन्होंने भी इसे लेकर बहुत उत्साह दिखाया। इस अंक के 'संपादन समन्वय' का दायित्व पीयूष ने ले लिया और अंक को आकार देने का काम आरंभ हो गया।

किसी पत्रिका के विशेषांक हेतु गुणवत्तापूर्ण रचनाएँ एकत्रित करने का कार्य सहज नहीं होता। रचनाएँ तो बहुत मिल सकती हैं, परंतु विषय की कसौटियों और गुणवत्ता के मानकों पर खरी रचनाएँ जुटाने का कार्य बहुत धैर्य की अपेक्षा करता है। सर्वप्रथम हमने कुछ विषय निश्चित किए और फिर उनपर आलेख संकलित करने की प्रक्रिया चल पड़ी। यह हमारे लिए संतोषजनक है कि मैंने और पीयूष जी ने जो विषय निश्चित किए थे, उनमें से अधिकांश विषयों पर हमें उत्तम आलेख प्राप्त हो गए। बहुत छाँट-फटक और चिंतन-मनन

की प्रक्रिया से होकर पत्रिका के इस संयुक्तांक में कुल 12 आलेख सम्मिलित किए गए हैं, जिनमें तुलसी-साहित्य तथा रामकथा के विविध पक्षों का सारगर्भित विवेचन करने का प्रयत्न हमारे सुधि लेखकों ने किया है। इस अंक के लिए गौरव का विषय है कि इसमें हिंदी आलोचना के पुरोधा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलेख 'तुलसी की भक्ति- पद्धति' को भी सम्मिलित किया गया है।

इस अंक का प्रथम आलेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है। शेष सभी आलेखों को लेखकों के नामानुसार अकारादि क्रम में रखा गया है। द्वितीय आलेख दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य) में सह-आचार्य डॉ अमित कुमार का है। अपने आलेख में डॉ. अमित ने तुलसीदास के रामराज्य की अवधारणा को सामाजिक आदर्श के प्रस्थापक के रूप में विवेचित किया है। वे लिखते हैं, "राम-काव्य के माध्यम से उन्होंने समाज की यथार्थ स्थिति का अवलोकन करते हुए अपनी रचनाओं में आदर्श व्यक्ति, परिवार और समाज की परिकल्पना करते हुए उसके साकार रूप की मंगलकामना प्रस्तुत की। सांस्कृतिक संक्रमण को पार करते हुए समरसता मूलक समाज की नींव रखता हुआ तुलसी का रामराज्य मानव मात्र के लिए कल्याणकारी साबित होता है।"

चर्चित भाषाविद् कमलेश कमल का आलेख तुलसीदास कृत रामचरितमानस में लोक-तत्त्व का अन्वेषण एवं विश्लेषण करता है। इस आलेख में लोकतत्त्व के भाषाई स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए मानस में उपस्थित उसके अभिलक्षणों का विस्तृत और गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कमलेश कमल लिखते हैं, “रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवतावादी मूल्य भी प्रकट होते हैं। इस महाग्रंथ का काव्यात्मक औदात्य अत्युत्तम है, संवेदनात्मक अन्वेषण अनुपम है और उससे लोक-चेतना मौलिक रूप में सर्वत्र अनुस्यूत है। आश्चर्य यह कि लोक की तमाम अभिव्यंजनाएँ उपस्थित हैं; पर अभिव्यक्ति का कोई दुहराव नहीं है।"

दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़ में अध्यापन कर रहीं ज्योति कुमारी का आलेख 'भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और रामचरितमानस' भारतीय पराधीनता के कालखण्ड में रामचरितमानस की भूमिका को बड़ी बारीकी से विवेचित करता है। ज्योति ने इस आलेख में अकबर से औरंगज़ेब और अंग्रेजों तक भारतीय चेतना को शक्ति प्रदान करने में तुलसीदास और रामचरितमानस के महत्व को विवेचित करने का प्रबुद्ध प्रयास किया है, "तुलसीदास युगदृष्टा थे। रामकथा को रामचरितमानस में पिरोकर उन्होंने एक ऐसा अमोघ अस्त्र दे दिया जो अकबर से लेकर औरंगजेब और अंग्रेजों तक की सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध का एक सशक्त उपकरण सिद्ध हुआ। यही नहीं, यदि आज हम अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर-निर्माण व प्राण-प्रतिष्ठा के गौरव- क्षण तक पहुंचे हैं, तो उसके पीछे भी कहीं न कहीं तुलसीदासजी और उनके महान ग्रंथ रामचरितमानस की महती भूमिका है, जिसने हमारे आत्मतत्व को एक हजार वर्ष की गुलामी के बाद भी बचाए रखा।”

वरिष्ठ स्तंभकार एवं साहित्यकार प्रमोद भार्गव ने 'रामकथावाचन और लोकजागरण' विषय पर कलम चलाई है। यह सत्य है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भारतीय समाज को सन्मार्ग पर सुदृढ़ और एकजुट रखने में हमारे कथावाचकों की महती भूमिका रही है। तुलसीदासजी गोस्वामी थे, कथावाचक थे। रामकथा

के माध्यम से अपने युग का जागरण उन्होंने किया था। यह परंपरा उनके आगे भी रही और आज भी है। प्रमोद भार्गव ने अपने आलेख में इसी परंपरा का अनुसंधान करने का प्रयत्न किया है। वे लिखते हैं, "कथावाचकों ने मुख्य रूप से गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' को ही अपने प्रवचनों का आधार बनाया है।... तुलसी की रामकथा ने तत्कालीन सामाजिक परिवेश और उसकी मानसिकता के यथार्थ को समझा। फिर समाज की इस पीड़ा को स्वानुभूत किया और एक दूरदृष्टा के रूप में रामभक्ति के माध्यम से रागात्मक वृत्तियों को ऐसी अभिव्यक्ति दी कि मुक्ति हेतु छटपटाते समकालीन समाज को भीतर से झकझोर दिया।"

अध्यापन-कर्म से जुड़े पीयूष कुमार दुबे ने अपने आलेख में तुलसी-साहित्य में उपस्थित राजनीतिक दृष्टि के विश्लेषण का प्रयास किया है। तुलसी के रामराज्य और आधुनिक लोकतंत्र का एक तुलनात्मक अध्ययन इस आलेख में उपस्थित है, जिसमें लेखक ने यह सिद्ध किया है कि आख़िर क्यों तुलसी के रामराज्य को महात्मा गांधी ने आधुनिक लोकतंत्र के लिए आदर्श माना था। तुलसी के रामराज्य को विवेचित करते हुए पीयूष ने लिखा है, "भारतीय ज्ञान-परंपरा में लोकतंत्र के संदर्भ में जो कुछ श्रेष्ठ उपस्थित है, उन सबका श्रेष्ठतम सारांश तुलसी के काव्य में रामराज्य का रूप लेकर अभिव्यंजित हुआ है।"

भारतीय समाज एवं संस्कृति की धुरी उसकी परिवार-व्यवस्था रही है। यह परिवार-बोध तुलसी के रामचरितमानस में भी गहरे उपस्थित है। वरिष्ठ स्तंभकार डॉ मोनिका शर्मा ने अपने आलेख में मानस में उपस्थित परिवार-बोध के सूत्रों को पकड़ने का गंभीर प्रयास किया है। वे लिखती हैं, "पितृ धर्म, मातृ धर्म, भ्रातृ धर्म, पुत्र धर्म, पति धर्म, पत्नी धर्म के साथ-साथ गुरु, शिष्य, सखा और शत्रु धर्म को भी तुलसीदास की रामचरितमानस में वर्णित-व्याख्यायित किया गया है।"

राम और रामकथा की ऐतिहासिकता के संदर्भ में चर्चित लेखक राजीव रंजन प्रसाद का आलेख महत्वपूर्ण है। यह आलेख तुलसी के रामचरितमानस की चौपाइयों तथा वाल्मीकि रामायण के श्लोकों का संदर्भ लेते हुए वर्तमान प्रमाणों से राम और रामकथा की ऐतिहासिकता को प्रमाणित करता है। यह आलेख पढ़ते हुए लेखक की गहन शोध-वृत्ति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। एक स्थान पर राजीव रंजन लिखते हैं, "जिन्होंने भी श्रीराम को झुठलाना चाहा है और पुरातात्विक साक्ष्य का अभाव कहने का प्रयास किया है उनके लिए इतिहासकार बी. बी. लाल का कथन उल्लेखनीय है कि हमें यह पुरानी कहावत याद रखनी चाहिये कि साक्ष्य का अभाव, अभाव का साक्ष्य नहीं होता।" यह आलेख राम और रामकथा के संदर्भ में अत्यंत महत्व का है।

रामायण केंद्र, भोपाल के निदेश डॉ राजेश श्रीवास्तव का आलेख रामकथा के लौकिक सौंदर्य की गहन विवेचना करता है। इस आलेख में तुलसी के 'लीला' शब्द की सुंदर व्याख्या हुई है। डॉ श्रीवास्तव ने वनगमन को रामकथा का सबसे मांगलिक प्रसंग माना है। उनके शब्दों में, "(वनगमन ही) रामकथा का वास्तविक सौंदर्य भी है और उसमें ही लोक का सौदर्य भी अपने प्रकर्ष पर उभरकर आता है।"

भारतीय लोक अपने आचारों में बहुत सरस और सुरुचिपूर्ण अभिव्यक्ति पाता है। भारतीय लोकाचारों का अत्यंत मनोहारी वर्णन तुलसी के साहित्य, विशेषतः रामचरितमानस में हुआ है। इस विषय को केंद्र में

रखकर अध्यापन-कर्म से जुड़े डॉ रमाकांत राय ने सुंदर आलेख लिखा है। अपने आलेख में डॉ राय ने रामचरितमानस में आए लोकाचार वर्णन संबंधी प्रसंगों को जिस सूक्ष्मता से पकड़ा है, वह उनके लेख को विशेष रूप से पठनीय बनाता है। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है, "इस महाकाव्य में अनेकों प्रसंग ऐसे हैं, जिसमें परंपरा का सुंदर नियोजन हुआ है, जिसने भारतीयता को सहेजने में सहायता की है और जो आने वाली पीढ़ियों के लिए नियामक रही है। इस महान ग्रंथ को भारतीय समाज में स्वीकृति भी इसीलिए प्राप्त है कि यह हमें कदम कदम पर एक उदाहरण देकर बताता है कि हमें क्या करना है और किस भांति से। सूत्र रूप में और कहीं कहीं विस्तार से इन आचरण सम्बन्धी कार्यकलापों और उपदेशों को पिरोया गया है।"

दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ़ वोकेशनल स्टडीज़ में प्राध्यापक डॉ. विनय विश्वास ने अपने आलेख 'रामचरितमानस में जनसाधारण का जीवन' में तुलसी की रामकथा में जनसाधारण के महत्व की बहुत सुंदर स्थापना की है। वे लिखते हैं, "रामचरितमानस' राम पर आधारित महाकाव्य है लेकिन जनसाधारण का जीवन उसमें अपनी जीवंतता के साथ मौजूद है। इस मौजूदगी पर ध्यान देना इस महाकाव्य और इसके महाकवि तुलसी, दोनों को ठीक-ठीक समझने के लिए ज़रूरी है। जनसाधारण का महत्व 'रामचरितमानस' में अनेक अवसरों पर चरितार्थ होता है।"

बैंकिंग सेवा से संबद्ध सतीश सिंह ने अपने आलेख में तुलसी-काव्य में उपस्थित आर्थिक चिंतन के पहलू के विश्लेषण का प्रयास किया है। यह सत्य है कि तुलसीदास जागतिक स्वार्थों से मुक्त साधक थे। किंतु, यह उनके अपने जीवन का सत्य था। संसार को उन्होंने उसकी संपूर्णता में देखा और उसी रूप में अभिव्यक्त भी किया। इस कारण सांसारिक जीवन के लिए आवश्यक आर्थिक पक्ष भी उनके सृजन की परिधि से बाहर नहीं हुआ अपितु येन-केन प्रकार से इसके भी सूत्र उनकी रचनाओं में आते गए। इन्हीं सूत्रों को पकड़ने का प्रयत्न सतीश सिंह ने किया है। एक स्थान पर वे लिखते हैं, "तुलसी ने सबसे बड़ा दुख दरिद्रता को माना है। कवितावली में उन्होंने दरिद्रता की तुलना रावण से करते हुए लिखा है दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबन्धु। यानी कि दरिद्रता रावण की तरह है, जिसे कितना भी दबाओ वो फिर से उठकर खड़ी हो जाती है।"

इन बारह आलेखों के साथ यह अंक अब सुधि पाठकों के हाथ में है। इसके अच्छे-बुरे के निर्णायक वही हैं। मैं इस अंक में सम्मिलित सभी लेखकों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने अपने महत्वपूर्ण आलेखों से इस अंक को समृद्ध बनाया है।

तुलसीदास का सृजन भक्ति और ज्ञान का महासागर है, उसकी थाह किसी एक पुस्तक या विशेषांक में संभव नहीं; किंतु, उस महासागर से ज्ञान के कुछ मोती बीनने का विनम्र प्रयास हमने 'भारतबोध' पत्रिका के इस संयुक्तांक के माध्यम से किया है। मेरा बालपन, मानस की चौपाइयों की छाँव में बीता है। बाबा पण्डित ब्रह्मदेव चौबे और पिता पण्डित गुप्तेश्वर चौबे के लिए रामचरितमानस की चौपाइयाँ जीवन का चरम साक्ष्य थीं। पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क, राजा-प्रजा, भाई- भाई के मेरे बोध के निर्माण में गोस्वामी तुलसीदास जी की रचनात्मकता का अभिन्न योगदान है। आजी तो पढ़ने-लिखने का अर्थ ही गोसाई जी को पढ़ना

मानती थीं। माँ को दुःख के क्षणों में चौपाई का ही उच्चारण करते देखा। इसीलिए जब पीयूष जी से संवाद हुआ तो हम लोगों ने तय किया कि गोस्वामी तुलसीदास पर ही पढ़त लिखत होगी। जो आप नहीं कर पाते, वो अपने शिष्यों के माध्यम से होते हुए देखते हैं। पीयूष नेह के पात्र हैं। परिवारजनों का बल रहता है, अतः उनका भी आभार है।

आशा है, गोस्वामी तुलसीदास की रचनात्मकता पर कुछ और बेहतर होगा। 'भारतबोध' पत्रिका का यह संयुक्तांक 'गोस्वामी तुलसीदास और उनकी लोक प्रज्ञा' विषय पर केंद्रित है। आग्रह है कि बिना पढ़े प्रतिक्रिया मत दीजिएगा।

आभार।

आचार्य (प्रो.) चन्दन कुमार

संपादक